हिंदुत्वसे प्रभावित वेदोपासक

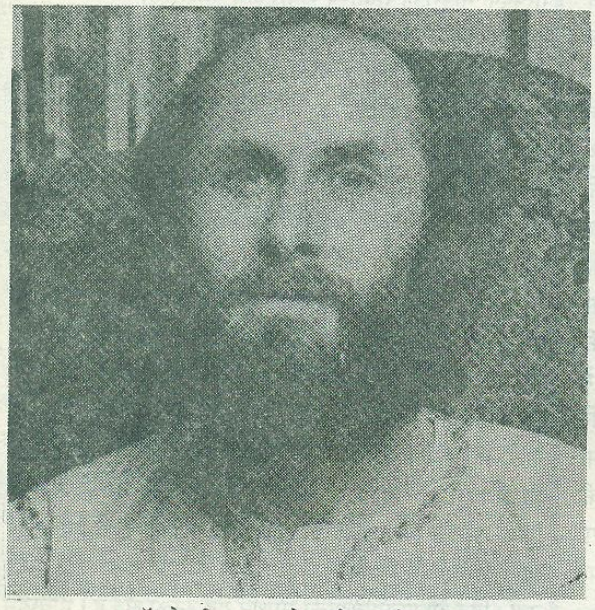

डॉ. डेव्हीड फ्राऊले ऊर्फ वामदेव शास्त्री

अमरिकामे पैदा हुए डॉ.डेव्हीड फ्राऊले ने अठराह बरस की अवस्थामें वेद तथा हिंदू अध्यात्म का अध्ययन प्रारंभ किया। तब से वे निरंतर हिंदू तत्वज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं। हिंदूधर्म विषयक चिंतन के उनके ग्रंथोंको अनेक विद्वानोंने और विश्वविद्यालयोंने मान्यता दी है। इस साल विश्वनाथजी स्मृति पुरस्कारसे उन्हें गौरवान्वित किया है। ऐसे उपासक के बारे में -

" -आठ बरस पहले आयुर्वेदिक औषधि उद्योग के क्षेत्र में सलाहगार की हैसियत से काम करता था तब डॉ. फ्राऊले से मेरा प्रथम परिचय हुआ। वे भी अमरिकाके किसी उद्योग के आयुर्वेदीय सलाहगार के नाते भारत में आये थे। उन्हें आयुर्वेदकीय दवाएँ चाहिये थी। उनके साथकी बहस के सिलसिले मे डॉ. फ्राऊलेको आयुर्वेदका गाढ़ा और सांगोपांग ज्ञान है, इसका मुझे एहसास हुआ। तब मैंने उनसे पूछा, आयुर्वेदकी ओर आप कैसे आकर्षित हुए ?'' जबाब में उन्होंने बताया कि वेदोंका अध्ययन करते समय उन्होंने अथर्व वेद पढ़ा और तबसे वे आयुर्वेकी तरफ आकर्षित हुए।'' यह उत्तर मुझे शंकित करनेवाला था। उनके साथ की बहस की दूसरी बारी पाँडिचरी में हुई और तब मुझे डॉ. फ्राऊले के व्यक्तिमत्व के रहस्य का मर्म सुलझने लगा। चालीसी से कम उम्रका यह आदमी वेदों के माध्यमसे आयुर्वेद की तरफ आकर्षित हुआ था। इसका अर्थ यही था कि इसने संपूर्ण वेदवाड़मय का अध्ययन किया था। बातोबातो में जब योगी अरविंदकी चर्चा निकली तब मेरे ध्यानमें आया कि मेरे से अधिक डॉ. फ्राऊले को अरविंद की योगसाधना, गीताभाष्य और उनकी जीवनी के सम्बन्धमें जानकारी मालुमात है। शामको उन्होंने मुझे 'ऋग्वेदका अध्यात्मज्ञान' उपनिषदकी दिव्य दृष्टि मे दो अंग्रेजीमें रखे हुए ग्रंथ मुझे सप्रेम भेट किये। उन किताबों को पढने पर फ्राऊल के प्रकांड पांडित्यका मुझे विश्वास हुआ लेकिन इस विषयमें वे खुद पंडित हैं इसका उन्हें जरा भी एहसास नहीं था। यह नितांत सीधा साधा, निरहंकारी, मासूम आदमी निष्ठावान हिंदू है, ऐसा मुझे लगा। एक दूसरों के प्रति सहज रूपसे निर्माण हुई आत्मीयता के कारण मैंने इन्हें पार्ले के मेरे मकान में रहने के लिये आमंत्रित किया।

हिंदू जीवन प्रणाली का आदर्श - डॉ. फ्राऊले जब मेरे घर पधारे तब वे स्वयं पूर्ण शाकाहारी हैं और उन्हें खास किसी विशेष चीजों की आवश्यकता नहीं यह स्पष्ट किया। दूसरे दिन वे सबेरे उठे, ठंडे पानीसे स्नान करके ध्यान धारणा और योगासन करने के लिए बैठे। यह कार्य पूरा करने के बाद शंकराचार्यके स्त्रोत्र पढ़नेमे वे तल्लीन हुए। बातों ही बातों में मुझे क्लिष्ट संस्कृत बचनों की याद आयी, उन्होंने कहा, तैत्तिरीय उपनिषदों से है। इतना ही नहीं उसी क्षण उन्होंने वह ग्रंथ निकालकर वे वचन मुझे दिखा दिये। यह वैचारिक परिचय जब अधिक गाढ़ा हुआ तब उन्होंने रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, योगी अरविंद और रमण महर्षि अपने देवता हैं ऐसा मुझे बताया। उन्होंने बताया ''हिंदू अध्यात्मके बारेमें केवल मुझे जिज्ञासा ही नही है बल्कि हिंदू जीवन प्रणाली व श्रध्दाव्यवस्था मैंने अत: करण से स्वीकार की है और दिलसे मैं हिंदू ही हूँ।'' हमारे परस्पर सम्बन्ध दृढ होते गये आरै दोस्ती अपने आप विकसित होती गयी। हर बरस वे भारतमें आते थे। उनका परिचय और परस्पर संवाद का क्षेत्र बढ़ता गया। मुंबई तथा पूनासे मैंने उन से व्याख्यान आयोजित किये। उनके प्रगाढ़ ज्ञानका सर्वत्र स्वागत किया गया। सहजही वे हमारे परिवारके सदस्य बन गये।

घर में देवालय - १९८९ के जुलाई महिनेमें आयुर्वेदिक औषधि उद्योजक के कारण मैं अमेरिका गया था। तब उन्होंने न्यू मैक्सिको राज्य के उनके सल्ला के नामक गाव में आने के लिये मुझे आमंत्रित किया। मैं चार दिन उनके यहाँ था। तब उनके हिंदूत्वका मुझे प्रत्यक्ष आदर्श ही देखने को मिला। उनके घरमें ठहरा था और उसमें शिव, विष्णु, गणेश, लक्ष्मी आदि देवताओं की मूर्तियाँ थीं। वे

हररोज उनकी पूजा करते थे। उनका रहन सहन एकदम सादगी पूर्णथा। वेदांग ज्योतिष यह उनके उपजीविका का साधन था। अपनी आवश्यकता के अनुसार ही कमाना यह उनका स्वभाव था। उनका अधिक समय पातंजल योग तथा आयुर्वेदका अध्ययन तथा संशोधनने और वेदवांङ्मय के लेखनमें वे बीताते थे। यह पूरा अध्ययन वे एकलव्य के समान खुद ही स्वप्रज्ञासे करते थे।

प्रचुर ग्रंथसंपदा- केवल बत्तीस बरसकी अवस्थामें उनका 'दि क्रिएटिव्ह व्हिजन इन उपनिषदाज' यह पहला मौलिक ग्रंथ प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथकी विशेषता यह थी कि उपनिषदकी भाषा 'मंत्रभाषा' है ऐसा उन्होंने एक अध्याय में विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया था। अनुवादसे उपनिषदके आध्यात्मिक विचारोंका मर्म नहीं समझा जाएगा। यह उनकी धारणा यथार्थ है। उनका दूसरा ग्रंथ ऋग्वेद के सम्बन्ध में है। इस ग्रंथ में उन्होंने ऋग्वेदकी ऋचाओंका गूढ अर्थ स्पष्ट करके विशद किया है। इस ग्रंथ में उनकी प्रतिभा और प्रज्ञाके जो दर्शन हुए हैं उसकी तुलना समीक्षकोंने योगी अरविंदके अंर्तदृष्टिसे की है। 'फ्रॉम दि रिव्हर ऑफ हेवन' अर्थात् - 'आयुर्वेदिक हीलिंग' और योग ऑफ हर्वस' ये उनकी दो किताबें अमरिकामे प्रकाशित हुंई। उनमेंसे 'आयुर्वेदिक हिलींग' पुस्तक की प्रस्तावना लिखने का उन्होंने मुझे अनुरोध किया। यह मैं मेरा गौरव मानता हूँ। मैंने वह प्रस्तावना लिख दी।

दिल्ली के 'व्हाइस ऑफ इंडिया' इस प्रकाशन संस्थाने इस साल 'अराइज अर्जुन' अर्जुना, युद्धासाठी सिध्द हो यह हिंदूत्वविषयक स्फुट लेखों का संग्रह और हिंदूइसम मे दो किताबें और आर्यांचे आक्रमण-एक आदाल असत्य यह प्रबंध प्रकाशित किया। केवल तेरह बरसके कालावधीमें डॉ. फ्राऊलेने कुछ हजार पृष्ठोंका लेखन करके बारह-तेरह किताबे लिखी हैं। अनेक नियत कारिकोंमें भी उन्होने योग तथा अन्य विषयोंपर स्फुट लेखन किया है। अमेरिका और युरोपमें इनका स्वागत हुआ है। भारतमें भी उसके कुछ किताबों की अनेक आवृत्तियाँ दिल्लीके मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन संस्थाने प्रकाशित की हैं। ये किताबे मुंबईमें उपलब्ध हैं।

हिंदूत्वके बौद्धिक युद्धभूमि में -जवाहरललाल नेहरू विश्वविद्यालय के साम्यवादी विद्वानोंने आर्य बाहरसे आये हुए आक्रमण करनेवाले लोग हैं अत: यह हिंदूओंका राष्ट्र हो ही नहीं सकता। ऐसा सिद्धान्त प्रस्थापित करने का प्रयाश किया है। रामजन्मभूमि के अभियानसे इस प्रचारको जहरीली धार प्राप्त हुई है। डॉ. फ्राऊले ने यह आह्वान स्वीकारा है। आर्य भारतीय ही थे अत: अनादिकाल से यह हिंदूओंकी ही भूमि है, यह ऐतिहासिक सत्य उन्होंने भारत और अमरिकामें अन्यान्य नियत कालिकोंमें लेख लिखकर और व्याख्याओं द्वारा साधार सिध्द किया है। उन्होंने प्रो. सुभाष काक, डॉ, नवरत्न राजाराम् आदि ख्यातिप्राप्त विद्वानोंकी एक संघटना अमरिकामें स्थापित की है। विश्वविद्यालयीन स्तरोंतक उनका विवेचन मान्यता प्राप्त कर रहा है। स्वामी विवेकानंद के सर्वधर्म परिषदके भाषणकी शताब्दि अमरिकामें वॉशिंग्टन, शिकागो आदि जगहोंपर संपन्न हुई। इस समय संपन्न हुए 'ग्लोबलव्हिजन' परिषदमें डॉ.फ्राऊले एक प्रमुख वक्ता थे। उस समय कुछ भारतीय साम्यवादियोंने हिंदुत्व का समर्थन करनेवाले संघटनों को 'फंडामेंटॅलीस्ट' कहकर उनकी आलोचना की और निदर्शन भी किये। उस समय हिंदू फंडामेंटॅलिस्ट हो ही नहीं सकते इस शिर्षक का लेख डॉ. फ्राऊलेने अमरिकन अखबारमें लिखा और मुँहतोड जबाब दिया।

डॉ. फ्राऊले को उनकी ज्ञानोपासनाके कारण पिछले साल उन्हें दिल्ली को, 'इंटरनॅशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज' इस संस्थाकी ओरसे 'वेदव्यास' पुरस्कार और 'लोकमान्य टिळक' पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. फ्राऊलेने १९८१ में अपने मुंबई केंटमें गोरगांव के मसुराश्रम के 'अर्यभास्कर' मासिक के संपादक श्री अवधूत शास्त्रीके अधिपत्यमें विधिपूर्वक हिंदू धर्मको स्वीकार किया। उनके रूपसे हिंदूत्व के बौध्दिक युद्ध भूमि को एक समर्थ ज्ञानी योध्दा और चिंतनशील योगी प्राप्त हुआ है, इसमें कोई संदेह नहीं। हिंदू अध्यात्माविद्याका समर्थन यह उनका क्षेत्र है। भविष्यमें इसी अध्यात्मकोविश्वधर्म के रूपमें दुनिया स्वीकार करेगी ऐसा उनका विश्वास है।

डॉ. फ्राउले वेदों के अभ्यासक और अध्यात्म के मार्ग से चलने वाले हैं लेकिन उनकी विशेषता यह है कि आजका हिंदू समाज के सामाजिक प्रश्न, भारत के धार्मिक संघर्ष और हिंदुत्व विरोधी शक्ति आदि का उन्हें भान है। उनके 'अर्जुना, ३० आणि युद्धाला सिद्ध हो !' इस ग्रंथमें आज हिंदू समाज की मानसिकता का जो पाश्चात्यीकरण चल रहा है, उसके बारेमें उन्होने खेद व्यक्त किया है। रामजन्मभूमीविषयक उनकी धारणाएँ विराद चौधरी और व्ही.एस. नाम्रपॉल के अभिप्रायसे मिलती जुलती है। ऐतिहासिक कालमें-अतीतमें मुस्लीमोंने हजारों देवालयोंका ध्वंस किया, जबरदस्तीसे धर्मांतर कराये और हिंदुओंपर अनन्वित अत्याचार किये यह इतिहास छुपानेमें कुछ अर्थ नहीं। रामजन्मभूमीका प्रश्न, हिंदुओं का मन समझनेकी कोशिश करके मुसलमानों ने हल करना चाहिये। सैकडो बरससे हिंदू समाजपर जो अन्याय होता रहा उसका उद्रेक होना स्वाभाविक है, हिंदूओंकी अस्मिता जागृत हो रहीहै, यह वेएक शुभचिन्ह मानते हैं। स्वामी विवेकानंद, योगी अरविंद जैसे महापुरूषोंने हिंदुत्वकी महती विशद की है। वे बारबार कहते हैं कि पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने के बजाय हिंदुओं को चाहिये कि वे अपने सत्वत्वका स्मरण करें। गर्वसे कहो हम हिंदू हैं।' यह

घोषणा संकुचित नहीं बल्कि हिंदूत्वके महानता का वह उद्‌गार है और यह घोषणा स्वामी विवेकानंदने अन्य भूमिकासे की है। हिंदुओं को चाहिये कि यह भूमिका वे अच्छी तरह से समझ लें। डॉ. फ्राऊले ये बातें अपने लेखन के द्वारा बारबार आग्रहपूर्वक प्रतिपादित करते हैं।

इस सम्बन्ध में मुझे एक प्रसंग याद आता है। १९८१ में शिवसेनाप्रमुख माननीय बाळासाहेब ठाकरे इन्हें ब्रह्मचारी विश्वनाथजी पुरस्कार, सन्मान के साथ दिया गया। उस समारंभमें भाषण देते समय मैंने कहा कि 'गर्व से कहो हम हिंदू हैं' यह स्वाभिमान दर्शक घोषणा बाळासाहेब हिंदू समाजको दी। तब मेरे भाषणके बीचमें मुझे रोकते हुए बाळासाहेब ने बताया कि यह घोषणा स्वामी विवेकानंदकी है।

माननीय बाळासाहेब के लड़ाकू हिंदुत्वका मूलस्त्रोत स्वामी विवेकानंद के विचारोंमें है। डॉ. फ्राऊलेने अर्जुना ऊठ आणि युद्ध कर इस लेखमें इसी लडाकू टेकको आवाहन किया है। सदियोंसे अन्याय और अत्याचार सहन करनें में कोई पौरूष नहीं, न्याय के लिये युद्ध करना ही चाहिये यह श्रीकृष्ण से प्राप्त संदेश है। इस संदेश का आध्यात्मिक भूमिकामे पुनरूच्चार करने वाले और हिंदुओं के सुखदु:खके साथ पूर्णरूपसे एकरूप होनेवाले इन वेदाचार्य वामदेव शास्त्री को उस सालका ब्रह्मचारी विश्वनाथजी स्मृति पुरस्कार दिया जाता है यह अत्यंत उचित है।

(सामना १०-१२-९५ से)

डॉ.शशिकला कर्डिले द्वारा अनुवादित-

५/८७१ शुभं करोती, विद्याविहार कॉलनी, नासिकरोड- १